कृषक समाचार

kvklodipurarwal@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

वर्ष 2016 | अंक – 04 | अक्टूबर–दिसम्बर, 2016

संरक्षक :

डा. अजय कुमार सिंह
कुलपति, बि.कृ.वि., सबौर, भागलपुर

मार्गदर्शक :

डा. एस. के. राय
निदेशक, कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (ATARI)
जोन II आई.सी.ए.आर., (कोलकता)

डा. आर. के. सोहाने
निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रकाशक :

डा० राकेश कुमार
वरीय वैज्ञानिक-सह-प्रधान
09934263033

सम्पादक मंडल :

डा० सी० एन० चौधरी
वैज्ञानिक, शस्य विज्ञान
09430872108

डा० के० पी० सिंह
वैज्ञानिक , उद्यान
09934634302

डा० कविता डालमिया
वैज्ञानिक, गृह विज्ञान
09431805020

डा० बिभा कुमारी
वैज्ञानिक, पशु चिकित्सा विज्ञान
08987387327

डा० निशांत प्रकाश
वैज्ञानिक, पौधा रोग
09450707592

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

संदेश

डा० अजय कुमार सिंह
कुलपति, बि.कृ.वि., सबौर, भागलपुर

बिहार के माननीय मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन में राज्य अपने कृषि रोड मैप के बलबूते इन्द्रधनुषी क्रान्ति लाने की तैयारी में है और इस दिशा में निरंतर सफलता मिलती जा रही है। कृषि रोड मैप के तहत कृषि प्रसार का मुख्य उद्देश्य कृषि ज्ञान का कौशल में परिवर्तन करना होगा जिसे अपनाकर किसान अपनी आय में बढ़ोत्तरी कर सकेंगे। कृषकों की सहभागिता की कड़ी को और मजबूत करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रत्येक शनिवार को किसानों के द्वार किसान चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे किसान भाई अधिक से अधिक लाभ उठा सकेंगे।कृषि के विभिन्न उद्यम जैसे कि फसल उत्पादन, मवेशीपालन, बानिकी, मशरुम उत्पादन इत्यादि को एक साथ इस प्रकार समायोजित किया जा रहा है कि वे एक दूसरे के पूरक हो जिससे संसाधनों की क्षमता, उत्पादकता एवं लाभप्रदता में पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए वृद्धि की जा सके। विश्वविद्यालय का प्रयास किसानों से एक रिश्ता कायम करने का है ताकि तकनीकी के प्रसार को नया आयाम दिया जा सके। इस दिशा में विश्वविद्यालय अन्तर्गत सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किसान चौपाल लगाये जा रहे हैं। साथ ही इन केन्द्रों द्वारा वीडियो कान्फ्रेन्सिग के माध्यम से किसानों को विश्वविद्यालय के मुख्यालय से जोड़ा जा रहा है, जिसकी सराहना राष्ट्रीय स्तर पर हो रही है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आप किसान भाई–बहनों का विश्वविद्यालय से बने रिश्ते को और मजबूती देगा।

प्रकाशक की कलम से

कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल द्वारा प्रकाशित कृषक समाचार का यह अंक हस्तगत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है।इस माध्यम से केन्द्र कृषि प्रचार की अपनी गतिविधियों को आपके समक्ष समयानुसार प्रभावी तरीके से रखने में सक्षम होगा।इस अंक में केन्द्र की आगामी गतिविधियों की जानकारी के साथ साथ सम सामयिक कृषिगत कार्य कलापों की जानकारी को हमने संक्षिप्त रूप में रखने का प्रयास किया है।

बंधुओ! प्रतियोगिता के इस युग में कृषि में भी चुनौतियाँ कम नही है। मौसम की बेरूखी, उत्पादो की गुणवत्ता, उचित बाजार एव मूल्य, कृषि कार्य हेतू नैसर्गिक संसाधनो का क्षरण, मृद्धा/जल मौसम की बेरूखी, गुणवत्ता पूर्ण बीजों का चुनाव, कृषिगत उत्पादों का भंडारण, उत्पादो का गुणवत्तायुक्त प्रसंस्करण एवं इन प्रसंस्कृत उत्पादों हेतू उचित मूल्य तथा बाजार की समस्या जैसी चुनौतियों से हमारा कृषि जगत रू.बरू होता रहा है। ऐसी परिस्थिति में कृषक भाईयों का ध्यान मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, भू.जल का समुचित उपयोग, रसायनिक उर्वरकों की अनुसंशित मात्रा का फसलों में प्रयोग, बीजोपचार तथा रसायनिक दवाओं के न्यूनतम (आवश्यकतानुसार) प्रयोग जैसी तकनीकों की ओर आकृष्ट करना चाहूँगा। समय पर कृषि कार्यों को आज सम्पन्न करने हेतू यांत्रीकीकरण की नितांत आवश्यकता है। इससे न केवल कृषि बल्कि कृषिगत उप.उत्पादों, पशु–पालन/मत्स्य पालन/मुर्गी पालन/बकरी पालन/सुकर पालन जैसे व्यवसायों का समावेश कृषि विधा के साथ.साथ करना होगा। यानि कि हमें समेकित कृषि प्रणाली की ओर अग्रसर होने की जरूरत है ताकि उत्पादों के साथ.साथ उप.उत्पादों का प्रयोग करते हुए अपनी मृदा और जल नैसर्गिग संसाधनो को संरक्षित करते हुए कृषिगत व्यवसाय से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके।

राकेश कुमार, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल

कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल द्वारा आयोजित किये जाने वाले चौपाल कार्यक्रम

दिनांक	गाँव का नाम	ब्लॉक का नाम	वैज्ञानिक का नाम
01.10.2016	पाण्डेचक	करपी	राकेश कुमार
15.10.2016	कुसेर मठिया	करपी	डा. के. पी. सिंह
22.10.2016	मंग्गा बिगहा	करपी	डा. निशांत प्रकाश
29.10.2016	कोनी	कलेर	डा. कविता डालमिया
05.11.2016	चमण्डी	बंशी	डा. बिभा कुमारी
12.11.2016	हरदीया	कलेर	डा. बिभा कुमारी
19.11.2016	बालागढ़	करपी	डा. सी.एन. चौधरी
26.11.2016	ओझा बिगहा	अरवल	राकेश कुमार
03.12.2016	शंकर बिगहा	कलेर	डा. के. पी. सिंह
10.12.2016	आमा बिगहा	अरवल	डा. निशांत प्रकाश
17.12.2016	राधे बिगहा	करपी	डा. कविता डालमिया
24.12.2016	कोदगौरे	कुर्था	डा. बिभा कुमारी
31.12.2016	बनिया बिगहा	अरवल	डा. सी.एन. चौधरी

अक्टूबर के प्रमुख कृषि कार्य

- नवम्बर माह में बोये जाने वाले गेहूँ के लिए खेत की तैयारी करें। असिंचित गेहूँ की बुआई करें।
- अच्छी तरह तैयार खेत में शरद्कालीन मक्का, आलू, सूरजमुखी आदि की बुआई करें।
- चना की बुआई करें। इसके लिए खेत की अधिक जुताई नहीं करें। बुआई के पूर्व बीजोपचार अवश्य कर लें।
- रबी चारा हेतु बरसीम (पूसा विकास), लूसर्न एवं जई (कैंट) लगावें। बुआई के पूर्व बीजोपचार अवश्य कर लें।
- अच्छी तरह तैयार खेत में फूलगोभी की रोपनी करें तथा पिछात किस्मों के लिए बिचड़े गिरा दें।
- शरद्कालीन ईख की रोपनी 15 अक्टूबर के बाद आरंभ कर दें।
- तम्बाकू, रबी अरहर एवं शकरकन्द की निकाई-गुड़ाई करें।
- रोपने के दस दिनों बाद आलू में एक हल्की सिंचाई करें।
- मिश्रीकन्द के फूलों की तुड़ाई (छँटनी) करें।
- पैरा फसल में तीसी, मसूर तथा केराव की बुआई धान में पानी सूखने पर करें।
- असिंचित क्षेत्रों में राई, सरसों एवं तोरी की बुआई खाद देकर करें।
- सुबबूल के पुराने क्षेत्रों में शाखाओं की छँटाई कर अन्तर्वर्ती फसल लगायें।

नवम्बर माह के प्रमुख कृषि कार्य

- आलू की निकौनी के बाद नेत्रजनीय उर्वरक की बची मात्रा देकर मिट्टी चढ़ा दें।
- गत माह के लगाये गये शरद्कालीन मक्के, सूरजमुखी, राई-तोरी-सरसों की बोने के 20-25 दिनों बाद प्रथम निकौनी एवं बछनी कर लें।
- बोयी गई फसलों (तीसी, चना, मसूर आदि) की निकाई-गुड़ाई करें। अगर तीसी की बुआई नहीं कर पायें हैं तो उसे प्रथम सप्ताह में जीवाणु खाद से उपचारित करके अवश्य बोयें।
- गेहूँ की बुआई माह के मध्य से जब तापमान 20°C से नीचे आने लगे तो प्रारंभ करें एवं जीवाणु खाद का अवश्य इस्तेमाल करें।
- शकरकन्द की निकाई-गुड़ाई करें।
- मिश्रीकन्द के फूलों की तुड़ाई करें। तम्बाकू में बंझा रोग की रोकथाम के लिए इमीडाक्लोपरीड 1 मि०ली० प्रति 3 लीटर पानी का घोल पौधों पर छीटें।
- पशुओं को रात में खुले स्थान पर नहीं रखें। पशुओं को खाने में एक चम्मच नमक का मिश्रण सुबह-शाम दें।
- मध्य नवम्बर तक सब्जी-मटर के बौनेविले या अन्य मध्यम मौसमी प्रभेद बोयें। मटर लगाने के पहले राइजोवियम बीजोपचार अवश्य कर लें।

दिसम्बर के प्रमुख कृषि कार्य

- नवम्बर माह में बोये हुए गेहूँ में (25-30 दिनों पर) प्रथम सिंचाई कर नाइट्रोजन उर्वरक से उपरिवेशन करें।
- अगहनी धान के बाद गेहूँ बोना हो तो खेत की तैयारी कर गेहूँ की बुआई करें।
- अगर नवम्बर माह में जौ की बुआई न हो पायी हो तो इसे प्रथम सप्ताह में पूरी कर लें। बुआई के पूर्व बीजोपचार अवश्य करें।
- तम्बाकू की फसल में आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई एवं सिंचाई करें।
- मिर्चा में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। फफूंदनाशक दवा का छिड़काव करें।
- बरसीम और लूसर्न की कटाई 25-30 दिनों के अन्तर पर करें। प्रत्येक कटनी के बाद सिंचाई (अधिक से अधिक 5 से०मी०) करें। सिंचाई के बाद खेतों में 10 किलो ग्राम प्रति हेक्टर की दर से नेत्रजन दे दें।
- आलू में आवश्यकतानुसार 10-15 दिनों के अन्तर पर सिंचाई करें।
- धान की कटनी पूरी करें। कटनी के उपरान्त अन्न सुखाकर उनके भण्डारण का भी उचित प्रबन्ध करें
- पिछात एवं अगात झुलसा के लिए इंडोफिल एम-45 का छिड़ाकाव करें।
- बानिकी में पोपलस, पॉलोनिया एवं सेलिक्स के ई० टी० पी० को लगायें।

मसूर

क्रम संख्या	प्रभेद	बुवाई का उपयुक्त समय	परिपक्वता अवधि (दिनों में)	उत्पादकता (क्विं./हे.)
1.	पंत 406	25 अक्टू. – 25 नवं.	140 – 145	15 – 20
2.	अवंतार (पी.एल. 77-12)	15 अक्टू. – 15 नवं.	110 – 120	22 – 25
3.	बी.आर. 25	15 अक्टू. – 15 नवं.	110 – 125	15 – 20
4.	पंत के. 639	17 अक्टू. – 15 नवं.	135 – 140	20 – 25
5.	मल्लिका (के. 75)	18 अक्टू. – 15 नवं.	130 – 135	18 – 20
6.	एच. यू. एल. 57	19 अक्टू. – 15 नवं.	120 – 125	18 – 20
7.	के. एल. एस. 218	20 अक्टू. – 15 नवं.	120 – 125	18 – 20

चना

क्रम संख्या	प्रभेद	बुवाई का उपयुक्त समय	परिपक्वता अवधि (दिनों में)	उत्पादकता (क्विं./हे.)
1.	पूसा 256	25 अक्टू. – 25 नवं.	150 – 160	22 – 25
2.	पूसा 240	15 अक्टू. – 15 नवं.	150 – 155	22 – 24
3.	पूसा 372	15 नवं. – 30 दिस.	130 – 140	20 – 22
4.	सी 235	10 नवं. – 10 दिस.	155 – 160	20 – 22
5.	पूसा 1003 (काबुली)	15 अक्टू. – 20 नवं.	150 – 160	15 – 18
6.	एस. जी. 2	20 अक्टू. – 20 नवं.	140 – 145	20 – 22
7.	आर.ए.यू. 52	25 अक्टू. – 20 नवं.	140 – 150	20 – 22

गेहूँ मे खरपतवार नियंत्रण एवं सिचाई प्रबंधन

खरपतवार नियंत्रण – गेहूँ की फसल में खर–पतवार के कारण उपज में 30 से 40 प्रतिशत उपज में कमी हो जाती है। अतः समय से खर–पतवार का नियंत्रण अति आवश्यक है। गेहूँ में मुख्यतः सकरी पत्ती वाले खरपतवार जैसे – गुल्ली डंडा, जंगली जई इत्यादि के अलावा चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार जैसे – कृष्ण नील, बथुआ, अंकटी, हिरणखुरी, सैंजी आदि पाये जाते हैं।

यांत्रिक विधि – (हैण्ड–हो) द्वारा निराई का फसल उत्पादन पर अच्छा प्रभव देखा गया हैं इसके अलावे खरपतवारनाशी का छिड़काव करने से समय पर खरपतवार का नियंत्रण हो जाता है।

खरपतवारनाशी रसायन	मात्रा एवं प्रयोग विधि	खरपतवार नियंत्रण
पेन्डीमेथालिन 30 ई0सी0	3.3 लीटर दवा प्रति हेक्टर की दर से 800 – 1000 लीटर पानी में घोल बना के बुआई के 2–3 दिन के अन्दर छिड़काव करें।	मुख्यतः घास कुल वाले खरपतवार जैसे – गुल्ली डण्डा, जंगली जई आदि
सल्फोसल्फयूरॉन (लीडर) 75 प्रतिशत डब्लू.जी.	35 ग्राम/हे0 की दर से 800–1000 लीटर पानी में घोल बना के बुआई के 25–30 दिन बाद छिड़काव करें	चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवार में वन गेहूँ (गुल्ली डण्डा) की समस्या के लिए खास दवा।
आइसोप्रोट्यूरॉन 75 प्रतिशत या 50 प्रतिशत डब्लू.पी.	1 किलो (50 प्रतिशत) या 750 ग्राम (75 प्रतिशत) डब्लू पी.की सक्रिय तत्त्व 800 – 1000 लीटर पानी में घोल बनाके बुआई के 25–30 दिन बाद छिड़काव करें	सकरी पत्ती वाले खरपतवार पर विशेष प्रभावकारी
2–4 डी0 सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत डब्लू. पी.	1.25 किलो दवा 800–1000 लीटर पानी में मिला के बुआई के 25–30 दिन बाद छिड़काव करें।	चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार जैसे – बथुआ, कृष्णनील, हिरण खुरी इत्यादि

संतुलित भोजन के लिए सब्जियाँ आवश्यक

सब्जियाँ हमारे भोजन का एक आवश्यक अंग है। अपने देश में अधिकांश जनसंख्या शाकाहारी है वहाँ सब्जियों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन 300 ग्राम सब्जियाँ खानी चाहिए। सब्जियाँ पाचन में मदद करती है, विभिन्न तरह की सब्जियाँ कार्बोहाइड्रेट, बसा, प्रोटीन, विटामिन और खनिज तत्वों की पूर्ति भी करती है।सब्जियों में निम्नलिखित विटामिन पाये जाते हैं

विटामिन	सब्जियाँ	विटामिन	सब्जियाँ
विटामिन ए	गाजर, पत्तागोभी, चुकन्दर, पपीता, पालक, हरी प्याज, मेथी,	लोहा	पालक, बथुआ, सरसों साग, पत्तागोभी सलाद, मटर, फ्रेंचबीन एवं बीट
विटामिन बी	पत्तागोभी , मटर, टमाटर, सेम, गाजर एवं प्याज		
विटामिन सी	टमाटर, हरी मिर्च, पत्तागोभी, आँवला नींबू	फासफोरस	गाजर, टमाटर, पालक, खीरा, सलाद
विटामिन ई	पत्तागोभी, सलाद, मटर प्याज तथा हरी पत्तीदार सब्जिय	आयोडीन	भिंडी
कैल्सियम	सेम गाजर पत्तागोभी, टमाटर, मटर पालक	सोडियम	सभी सब्जियों

मशरूम उत्पादन पौष्टिक एवं औषधीय गुणों से भरपुर मशरूम एक प्राकृतिक प्रदत्त फंफूद है, जिसका उत्पादन हम अतिरिक्त व्यवसाय के रूप में कर सकते है। हमारे यहाँ मुख्यतः ओयस्टर या ढ़िंगरी मशरूम एवं बटन मशरूम का उत्पादन होता है। उत्पादन अवधि सितम्बर से मार्च। तापमान 22–280 से0, आर्द्रता 80–85 प्रतिशत। बीज की मात्राः 100–150 ग्राम 1 कि0ग्रा0 शुष्क पुआल अथवा 2–3 प्रतिशत फार्मलीन उपचारित पुआल की मात्रा के अनुसार।

उत्पादन विधि : पुआल की कुट्टी या गेहूँ के भूसा को गर्म पानी में खौला कर उपचारित करें। तत्पश्चात ठंडा कर भूसे में 100 ग्राम बेसन तथा 50 ग्राम चोकर के साथ 100–150 ग्राम बीज प्रति कि0ग्रा0 शुष्क पुआल की दर से मिलाये। फिर इसे प्लास्टिक की जालीदार थैली में भरकर पॉलीथीन के थैले में बन्द कर निम्न ताप एवं उच्च आर्द्रता वाले कमरे में टांग दें। 12–15 दिनों में मशरूम का सफेद कवक जाल के पुआल को ढँक लेगा, तब पॉलीथीन को हटा दें। अगले 8–10 दिनों में मशरूम तोड़ने योग्य हो जायेगा। उपज 600–800 ग्राम प्रति किलो शुष्क पुआल।

कृषक समाचार

कृषि विज्ञान केन्द्र,
अरवल

जीरो टिलेज से गेहूँ की खेती

जीरो टिलेज से गेहूँ की खेती

☆ धान की फसल की कटाई के उपरांत उसी खेत में बिना जुताई किये हुये जीरो-सीड-टिल-ड्रिल (जिसमें उर्वरक एवं बीज एक साथ प्रयोग किये जा सकते हैं।) द्वारा गेहूँ बुआई करने की विधि को जीरो टिलेज तकनीक कहते हैं।

जीरो टिलेज की आवश्यकता

☆ बिहार के निचले धनहर क्षेत्रों में धान देरीसे काटता है तथा खेत तैयार करते-करते गेहूँ की बुआई दिसंबर के अंत या जनवरी के प्रथम सप्ताह तक की जाती है।

☆ दक्षिण बिहार के अधिकांश क्षेत्र की मिट्टी भारी होने के कारण निम्न जलनिकास, उच्च जलधारण क्षमता और अधिक नमी की वजह से जुताई में कठिनाई एवं ढेलों के निर्माण आदि के कारण खेत तैयारी में 15 से 45 दिनों की देरी होती है।

☆ विलम्ब से बुआई (10 दिसम्बर के बाद) के कारण अच्छी लागत के बावजूद उपज 30-35 किलोग्राम प्रति हे० प्रतिदिन की कमीदर्ज की गई है। विलम्ब से बुआई के कारण फसल कटनी के समय तापमान (ज्मतउपदंस ैमंक) अधिक हो जाता ळ, जिससे उत्पादकता में कमी आती है। खेत की तैयारी और बुआई की परम्परागत पद्धति के विपरित जीरो टलेज तकनीक अपनाने से न केवल बुआई के समय में 15-20 दिनों की बचत सम्भव है, बल्कि उत्पादकता का उच्च सतर बरकरार रखते हुए खेत की तैयारी पर आने वाली लागत पूर्णत: बचायी जा सकती है।

प्रभेदों का चुनाव

प्रभेद का चुनाव बुआई का समय एवं सिंचाई की व्यवस्था के अनुसार करते हैं।

परिस्थिति	उचित प्रभेद
सिंचित (सामयिक 15 नवम्बर से 10 दिसम्बर)	एच.डी.-2733, एच.डी.-2824, एच.पी.-1731, पी.बी.डब्लू.-343, पी.बी.डब्लू.-443, के.-9107, एच.यू.डब्लू.-468, एच.पी.-1771
विलंब (11 दिसम्बर-25 दिसम्बर)	एन.डब्लू.-1014, एच.डी.-2643, एम.डब्लू.-263, एन.डब्लू.-1041 एच.डब्लू.-2045, के.-943, एच.डी.-288
अतिविलंब (26 दिसम्बर-10 जनवरी)	एच.डी.-2285, एच.डी.-2307 एच.डी.-2402
सीमित सिंचाई	एच.पी.-1731, एच.यू.डब्लू.-326
असिंचित	सी.-306, के.-8027, एच.डी.-2781, एच.डी.आर.-72

रबी की तेलहनी फसलें

उन्नत प्रभेद	बोआई का समय	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसत उपज (क्वि०/हे०)	अभ्युक्ति
तीसी				
टी. 397	10 अक्टूबर–15 नवम्बर	120–130	10–12	तेल की मात्रा 40 प्रतिशत, पैरा फसल हेतु उपयुक्त
सुभ्रा	10 अक्टूबर–15 नवम्बर	130–135	10–12	तेल की मात्रा 44 प्रतिशत
गरीमा	10 अक्टूबर–15 नवम्बर	125–130	12–14	तेल की मात्रा 42 प्रतिशत
श्वेता	10 अक्टूबर–15 नवम्बर	140–145	10–12	तेल की मात्रा 41 प्रतिशत
शेखर	10 अक्टूबर–15 नवम्बर	135–140	12–15	तेल की मात्रा 43 प्रतिशत, पैरा फसल हेतु उपयुक्त
पार्वती	20 अक्टूबर–20 नवम्बर	140–146	10–12	सिंचित खेती के लिये उपयुक्त, द्विउद्देश्यीय
			(10 क्वि. रेशा)	तेल की मात्रा 42 प्रतिशत
मीरा	20 अक्टूबर–20 नवम्बर	135–140	10–12	सिंचित खेती के लिये उपयुक्त, द्विउद्देश्यीय
			(10 क्वि. रेशा)	तेल की मात्रा 42 प्रतिशत
रश्मि	20 अक्टूबर–20 नवम्बर	140–46	10–12	सिंचित खेती के लिये उपयुक्त, द्विउद्देश्यीय,
			(07 क्वि. रेशा)	तेल की मात्रा 41 प्रतिशत

उन्नत प्रभेद	बोआई का समय	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसत उपज (क्वि०/हे०)	अभ्युक्ति
तोरी				
आर.ए.यू.टी.एस. 17	25 सितम्बर से 10 अक्टूबर	90–95	12–15	तेल की मात्रा 43 प्रतिशत
पाचाली		95–105	10–12	तेल की मात्रा 40 प्रतिशत
पी.टी. 303		95–100	12–14	तेल की मात्रा 43 प्रतिशत
भवानी		90–95	10–12	तेल की मात्रा 41 प्रतिशत
पीली सरसों				
66–197–3	10 – 20 अक्टूबर	120–125	14–16	तेल की मात्रा 43 प्रतिशत
राजेन्द्र सरसों–1		95–100	15–16	तेल की मात्रा 46 प्रतिशत
स्वर्णा		110–120	14–16	तेल की मात्रा 47 प्रतिशत
राई				
वरूणा	15–25 अक्टूबर	135–140	20–22	तेल की मात्रा 42 प्रतिशत
पूसा बोल्ड	15–25 अक्टूबर	120–140	18–20	तेल की मात्रा 42 प्रतिशत
क्रांति	15–25 अक्टूबर	125–130	20–22	तेल की मात्रा 40 प्रतिशत
राजेन्द्र राई पछेती	15 नवम्बर–10 दिसम्बर	105–115	12–14	तेल की मात्रा 41 प्रतिशत
राजेन्द्र अनुकूल	15 नवम्बर–10 दिसम्बर	105–115	10–13	तेल की मात्रा 40 प्रतिशत
राजेन्द्र सुफलाम	15नवम्बर–25 दिसम्बर	105–115	12–15	तेल की मात्रा 40 प्रतिशत

कृषि से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए विश्वविद्यालय का टॉल फ्री नं0 1800 345 6455 (पूर्वाहन 5.00 बजे से अपराह्न 7.00 बजे तक) एवं फार्मर्स हेल्पलाईन : farmershelplinebausabour@gmail.com पर संपर्क करें।

कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

kvklodipurarwal@gmail.com

द्वारा प्रकाशित तथा दीक्षाआर्ट एण्ड प्रिन्टस, पटना, email: dikshaart2010@gmail.com # 9431436534 द्वारा मुद्रित